International Journal of HumanitiesAnd Social Science Research
www.socialsciencejournal.in
ISSN: 2455-2070
Received: 24-08-2023, Accepted: 11-09-2023, Published: 27-09-2023
Volume 9, Issue 5, 2023, Page No. 25-27

महाकवि कालिदास की कृतियों का ऐतिहासिक महत्व

गुरबक्श राय
सहायक प्रोफेसर, इतिहास विभाग, शासकीय स्नातक महाविद्यालय हरोली, ऊना, हिमाचल प्रदेश, भारत

सारांश
भारतीय प्रतिभा के देदीप्यमान नक्षत्र महाकवि कालिदास ने अपनी नवनवोन्मेषी प्रज्ञा के प्रकाश से न केवल इस भारतभूमि अपितु सम्पूर्ण विश्व को अलोकित किया है। जगत के समस्त सुध्युपासकों ने उनकी महत्ता के मान में अपना गौरवोन्नत मस्तक सादर नत किया है। उनकी लेखनी से जिस अमर साहित्य की सृष्टि हुई है, उसके कारण हम समस्त भारतीयों का मस्तक गौरव से उन्नत हुआ है। मानव के मनोविश्लेषण में कालिदास की सिद्धहस्त लेखनी ने चरमसीमा को स्पर्श किया है। कालिदास का मानव किसी प्रदेश या भाषा विशेष का न होकर समस्त मानवता का प्रतिनिधित्व करता है। महाकवि कालीदास संस्कृत भाषा के महान नाटककार एंव कवि थे। उन्होने प्राचीन काल में अपनी विलक्षण प्रतिमा से अनेक प्रसिद्ध ग्रन्थ लिखे जिनमें नाटक एंव काव्य रचनाएँ शामिल हैं।

मूल शब्दः महाकवि, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मेघदूतम्, उज्जैन

भूमिका
दुनिया में सैकड़ों भाषाएँ हैं। हालाँकि, महान और शास्त्रीय साहित्य, जिसे सभी देशों के लोगों को पढ़ने की जरूरत है, केवल कुछ ही भाषाओं में पाया जाता है। ऐसी ही एक महान भाषा है संस्कृत। यह सबसे पुरानी भाषाओं में से एक है। यह उत्तर में हिंदी, बंगाली और मराठी जैसी कई भारतीय भाषाओं की जननी है। कन्नड़, तेलुगु और दक्षिण की अन्य भाषाएं भी इससे पोषित हुई हैं। किसी भाषा को विश्व प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए साहित्यिक महाकाव्यों की रचना करने वाले कवियों और महान विचारकों की प्रतिभा की आवश्यकता होती है। जिस कवि ने इस वैभवशाली संस्कृत साहित्य में विशिष्ट और गौरवशाली योगदान दिया है वह कालिदास है। उन्होने रचनाओं में जीवन की सुंदरता का चित्रण किया है और इस बात पर विचार किया है कि हम उदार और शालीन व्यवहार से दूसरों को कैसे खुशी दे सकते हैं। उनके चित्रण सजीव और हृदयस्पर्शी हैं, उनकी शब्द शक्ति अद्वितीय है. थोड़े से शब्दों में वह सम्पूर्ण आशय को सामने लाने में सक्षम है। उनका लेखन लोगों के लिए जीवन के एक महान सार्थक तरीके को मार्मिक ढंग से दर्शाता है। उनकी रचनाएँ विचारकों और आम पाठकों के लिए एक बौद्धिक उपहार है।

जीवन परिचय
कालिदास किस काल खण्ड में हुए और उनका आरम्भिक जीवन कैसा था, पर्याप्त स्त्रोतों के अभाव में अधिक स्पष्ट नहीं है। लेकिन यह मान्यता है कि कालिदास 150 ई. से 450 ई. के बीच में हुए होंगे। अधिकांश विद्वान उनका सम्बन्ध गुप्त काल से जोड़ते हैं और यह माना जाता है कि महाकवि कालिदास गुप्त वंश के महान सम्राट चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के दरबारी थे। उनके जन्म के सम्बन्ध में भी विद्वानों में मतभेद हैं। विभिन्न विद्वान उनका जन्म स्थान कश्मीर, बंगाल, पंजाब, मालवा एंव उज्जैन सिद्ध करने का यत्न करते हैं। कालीदास की रचनाओं में उज्जैन के प्रति विशेष अनुराग देखने को मिलता है। डॉ. कृष्ण मणी त्रिपाठी के अनुसार कालीदास उज्जैन के ही निवासी थे। वे लिखतें हैं कि पर्वतों में हिमालय, नगरियों में उज्जैनियों, देवताओं में शिव, अलंकारों में उपमा और छन्दों में मन्दाकान्ता कालीदास को परम
महाकवि कालिदास की कृतियों का ऐतिहासिक महत्व प्रिय थे। अतः स्पष्ट है कि उनका सम्बन्ध उत्तर भारत और विशेषकर उज्जैन से ही था जो कि चौथी पांचवी शताब्दी में गुप्तों की राजधानी थी। श्री एमआर काले भी इस मत के समर्थक हैं। कि कालीदास की जन्म भूमि उज्जैन थी। वे लिखते हैं

'His birth place probably some where in Malwa in Central India] And fromhis description of the city of Ujjayini it has been even suggested that he wasA
resident of that city"

विद्वानों का मत है कि प्रारम्भ में कालीदास अनपढ़ एंव मूर्ख थे परन्तु महाराजा सदानन्द की पुत्री विधान्तमा जो कि बड़ी विदुषी एंव सुन्दरी थी, के साथ कालीदास का विवाह हुआ। तब संयोग से कुछ ऐसी घटनाएं घटी कि कालीदास को गृह त्याग करना पड़ा और कुछ ही वर्षों में वे महान् विद्वान बन गए।

कालीदास की रचनाएं
कालीदास द्वारा रचित ग्रन्थों की तालिका बहुत लम्बी है, परन्तु विद्वानों का मत है कि इस नाम के ओर भी कवि हुए हैं जिनकी वे रचनाएं हो सकती हैं। कालीदास की सात रचनाएं प्रसिद्ध हैं जिनमें चार काव्य ग्रन्थ हैं– (1) रघुवंश, (2) कुमारसम्भव, (3) मेघदूत एवं (4) ऋतुसंहार। इसी तरह कालीदास द्वारा रचित तीन नाटक हैं (1) अभिज्ञानशाकुन्तलम (2) मालविकाग्निमित्र एवं (3) विक्रमोवर्षीय। इन रचनाओं के कारण कालीदास की गणना विश्व के सर्वश्रेष्ठ कवियों एंव नाटककारों में होती है।
काव्यों में कालीदास द्वारा रचित श्रघुवंशश एक अनुपम महाकाव्य है। जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है कि यह काव्य रघुकुल के सूर्यवंशी क्षत्रिय राजाओं के जीवन चरित्र पर चित्रित किया गया है। यह महाकाव्य 19 सर्गों में विभाजित है। प्रथम सर्ग में सम्राट दिलीप का वर्णन, द्वितीय में नन्दिनी वरदान, तृतीय में रघु के जन्म, नवग में राजा दशरथ एवं 10वें से 14वें तक क्रमशः राम चरित्र का सुन्दर चित्रण किया है। रघुवंश को प्रायः सभी काव्य ग्रन्थों में श्रेष्ठ माना जाता है। कुमारसम्भव एक अन्य महाकाव्य है जो कि 17 सर्गों में विभाजित है। इसमें भगवान शिव और पार्वती के पाणिग्रहण और कार्तिकेय के जन्म का वर्णन है। मेघदूत कालीदास की अनुपम काव्य रचना है। इस कलात्मक कृति में कालीदास ने काव्य नायिका प्रेयसी को सन्देश भेजने के लिए मेघ को दूत बनाकर चित्रण किया है। पं. महावीर प्रसाद दिवेदी जी ने इस काव्य की प्रशंसा करते हुए कहा है–

श्कविता कामिनी के कमनीय नगर में कालीदास का मेघदूत ऐसे भव्य भवन के सदृश्य है जिसमें पद्य रूपी अनमोल रत्न जड़े हैं।" ऋतुसंहार में कालीदास के प्रकृति प्रेमी होने के प्रमाण मिलते हैं। इस काव्य में कवि ने ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर और वसन्त ऋतुओं का नैसर्गिक वर्णन किया है।

काव्य रचनाओं के अलावा कालीदास को नाटककार के रूप में अति महारत हासिल थी। कालीदास द्वारा रचित नाटकों में अभिज्ञान शाकुन्तलम् प्रथम रचित नाटक हैं। इस नाटक में हस्तिनापुर के चक्रवर्ती राजा दुष्येन्त और कुलपति कण्न की पोश्यपुत्री शकुन्तला के गन्दर्भ विवाह का नाटय चित्रण किया हैं। विक्रमोर्वषीय कालीदास का दूसरा नाटक हैं। इसकी कथा का मूल स्त्रोत श्ऋग्वेद, शतपथ ब्राहम्ण तथा मत्स्यपुराण हैं। कालीदास के नाटकों में ऐतिहासिक दृष्टि से रचित नाटक मालविकाग्निमित्र है। इसमें नाटक का मुख्य नायक विदिशा के राजा शुंग वंश के पुष्यमित्र शुंग का पुत्र अग्निमित्र है जो कि विदर्भ के राजा की भगिनी मालविका से प्रेम करने लगता है। "यह नाटक रंगमंच आकर्षण होने के साथ–साथ ऐतिहासिक रूप से अन्यन्त महत्वपूर्ण है।

कालीदास की कृतियों का ऐतिहासिक महत्व

कालीदास की काव्य एवं नाटय कृतियों ऐतिहासिक रूप में बहुत महत्वपूर्ण हैं। महाकवि कालीदास ने जहां गुप्तकालीन भूगोल का चित्रण अपनी काव्य रचनाओं में किया है वहीं मालविकाग्निमित्र जैसे नाटकों में ऐतिहासिक पात्रों के सन्निकट भी चित्रण किया है। कालीदास ने प्राचीन काल में संस्कृत भाषा के पुनरुत्थान एवं पोषण में अभूतपूर्व सेवाएं दी। उसकी गणना, विक्रमादित्य के नव रत्नो में की जाती थी। कालीदास द्वारा प्राचीन स्थलों, नगरों, राज्यों, राजाओं और चर्चित नायकों का किया गया जीवन चित्रण यह सिद्ध करता है कि प्राचीन काल में गुप्त काल वैभव का काल था। इस काल में राजा कला, साहित्य और भाषाओं के संरक्षण के लिए उदार थे और विद्वानों, लेखकों एंव कवियों का विशेष सम्मान करते थे। कालीदास के अनुपम नाटकों की आज भी प्रासंगिकता विद्यमान है। संस्कृत साहित्य कालीदास की कृतियों के बिना अधूरा है। हालांकि मध्यकाल में संस्कृत भाषा एंव उसके विकास में बाधाएं आई परन्तु ब्रिटिश विद्वानों में से एक ऐसा वर्ग था जो संस्कृत भाषा के प्राचीनतम् गौरव एंव महान् संस्कृत साहित्य का प्रशंसक था। इन विद्वानो में सर विलियम जोन्स, एंव एच. एच. विल्सन प्रमुख थे। विल्सन ने सर्वप्रथम अभिज्ञानशाकुन्तलम का अंग्रेजी में अनुवाद करवाया था। यह कालीदास की विधा ही थी जिसने यूरोपीय विद्वानों को संस्कृत साहित्य की ओर आकृष्ट किया। उसके नाटकों की तुलना इग्लैंड के 16वीं शताब्दी के प्रसिद्ध नाटककार श्शेक्सपीयरश से की जाती है और यूरोपीय विद्वान कालीदास को भारतीय शेक्सपीयर की उपमा देतें हैं। तथापि हमें इस बात का भी गौरव होना चाहिए कि शेक्सपीयर ने जिस विदूषक के विद्वतापूर्ण चित्रों का नाटय 16वीं शताब्दी में किया (ज्ञपदह स्मंत), वही विधा कालीदास ने चौथी पांचवी शताब्दी में अभिज्ञानशाकुन्तलम में प्रकट कर दी थी। अतः कालीदास अधिक श्रेष्ठ एंव विद्वान थे।

कालिदास की भाषा शैली

भारतीय हिंदी साहित्य के प्राचीन इतिहास में जितने भी कई हुई है उनमें महाकवि का स्थान एक बहुत ही महान कवियों में गिना जाता है कहा जाता है कि उनकी रचनाओं में भव्यता आदर्शवादी परपंरा और आदर्श इतना समाहित होता है कि जो भी व्यक्ति एक बार पढ़ ले वह भावुक हो जाएगा।

उनके एक महत्त्वपूर्ण अंग संगीत को भी माना जाता है कालिदास की रचनाओं में भाषा शैली सरल और मधुर भाषा का इस्तेमाल उन्होने किया है और उनकी जो भी रचना है वह अंलकार युक्त है।

कालिदास की विरासत भारतीय साहित्य पर प्रभाव और प्रभाव

कालिदास की साहित्यिक प्रतिभा समय और स्थान को पार करती है, भारतीय साहित्य और उससे आगे एक अमिट छाप छोड़ती है, उनकी रचनाओं ने न केवल पीढ़ियों का मनोरंजन किया है बल्कि कलात्मक परिदृश्य को भी आकार दिया है, आइए इस साहित्यिक ज्योतिर्मय की स्थायी विरासत में तल्लीन हों।

1. साहित्यिक प्रभाव

कालिदास की लेखन शैली और विषयगत गहराई का बाद की पीढ़ीयों के कवियों और नाटककारों पर गहरा प्रभाव पड़ा है। उल्लेखनीय सरलता के साथ जटिल भावनाओं को चित्रित करने की उन्होने क्षमता समकालीन साहित्य में भी सभी विधाओं के लेखकों को प्रेरित करती रही है।

2. सांस्कृतिक महत्त्व

कालिदास की रचनाएँ केवल साहित्य के टुकड़े नहीं हैं, वे सांस्कृतिक कलाकृतियाँ हैं जो प्राचीन भारतीय समाज, विश्वासों और परंपराओं में अमूल्य अंतदृष्टि प्रदान करती हैं। मानवीय रिश्तों की बारीकियों का उनका चित्रण और उनकी रचनाओं में खोजें गए कालातीत विषय विविध पृष्ठभूमि के पाठकों के साथ प्रतिध्वनित होते हैं।

3. वैश्विक मान्यता

जबकि कालिदास की रचनाएँ मूल रूप से संस्कृत में लिखी गई थीं, उनके सार्वभौमिक विषयों और कालातीत अपील ने भाषाई और सांस्कृतिक बाधाओं को पार कर लिया है। उनके कार्यों के अनुवाद ने दुनिया भर के पाठकों को उनके लेखन की सुंदरता और प्रतिभा की सराहना करने की अनुमति दी है। जिससे उन्हें एक साहित्यिक चमकदार के रूप में वैश्विक पहचान मिली है।

महाकवि कालिदास के बारे मे कुछ महत्वपूर्ण तथ्यः

- महाकवि कालिदास ने अपने सभी कृत्यों में सरल और मधुर भाषा का उपयोग किया है और उनकी सारी रचनाएं अलंकार युक्त होती है।
- कवि कालिदास ने अपनी रचनाओं में श्रृंगार रस का काफी उपयोग किया है।
- महाकवि ने अपने द्वारा रची गई रचनाओं में ऋतुओं का भी वर्णन बखूबी किया है।
- कालिदास ने जो भी रचनाएं की हैं, उन रचनाओं में प्रेम रस का बेखुदी वर्णन किया है। कहते हैं कालिदास का नाम कालिदास इसलिए पड़ा क्योंकि वह मां काली के पर्म उपासक थे और इनके नाम में भी काली की सेवा करने का अर्थ उत्पन्न होता है।
- महाकवि कालिदास जिसके समकालीन हुए थे इसपर हमेशा ही विध्वानों के बीच मतभेद होते ही रहता है। फिर भी बहुत से लोगों का मानना है कि कालिदास सम्राट विक्रमादित्य या फिर गुप्त काल के राजा चंद्रगुप्त विक्रमादित्य के समय समकालीन थे।
- कालिदास के समकालीन के साथ ही इनके जन्मस्थान को भी लेकर विध्वानों के बीच काफी मत्भेद देखा जाता है। कुछ विध्वान कालिदास को बंगाल का बताते हैं तो कुछ उज्जैन का बताते हैं कुछ विध्वान तो कालिदास को उड़ीसा का भी बताते हैं। हालांकि उनके मत का प्रमाण नहीं है। लेकिन यह प्रमाणित रूप से कहा जाता है कि कालिदास जरूर ब्राहम्ण वंश के थे और उनका लालन पालन एक ग्वाले के परिवार में हुआ था।

- माना जाता है कि कालिदास अपने प्रारंभिक जीवन में काफी ज्यादा मुर्ख इन्सान माने जाते थे। यह अनपढ़ भी थे। इन्हें किसी चीज का ज्ञान नहीं था। यहां तक की इतने मुर्ख थे कि एक दिन कुछ लोगों ने एक पेड़ उस डाली को काटते देखा, जिस डाली पर यह बैठे हुए थे। बहुत सारी कथाएं और किवदंतियां इनके ऊपर लिखी गई हैं, जिनमे कालिदास की चरित्र और उनकी शारीरिक सुंदरताओं का भी वर्णन किया गया है।
- कालिदास के सम्मान में 1980 में कालिदास पुरस्कार घोषित किया गया। यह पुरस्कार मध्य प्रदेश सरकार द्वारा प्रतिवर्ष घोषित किया जाता है। यह पुरस्कार उन लोगों को दिया जाता है, जिनका
- शास्त्रीय नृत्य, रंगमंच कला, शास्त्रीय संगीत और कला के क्षेत्र में उत्कृष्ट भूमिका रहती है। कालिदास ने अपने जीवन काल में चालीस रचनाएं लिखी थी जिनमें से सात रचनाएं सुप्रसिद्ध हुई थीं। उन्हीं सुप्रसिद्ध रचनाओं में से एक मेघदूत भी है, जिसमें कालिदास ने एक पति और पत्नी के प्रेम का वर्णन किया है। यह एक खंडकाव्य है।
- कालिदास का विवाह मालव राज्य की अत्यंत बुदिधमान और रूपवति राजकुमारी विद्योतमा से हुई थी। कहते हैं अपनी इसी पत्नी के अपमान पर कालिदास एक मुर्ख व्यक्ति से एक महान साहित्यकार बनते हैं।

निष्कर्ष

महाकवि कालीदास की कृतियां संस्कृत ही नहीं वरन सम्पूर्ण भारतीय साहित्य का प्रकाशपुंज हैं। हालांकि इतिहासकार कवि कालीदास के सही समय काल एंव उसके शासकों से सम्बंधित समय पर एकमत नहीं हैं तथापि कालिदास को प्राचीन काल में कवियों (संस्कृत साहित्य) का महान प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार करते हैं। हमें यह भी तथ्य समझना होगा कि आज कालीदास स्वयं इतिहास के पृष्ठों में एक सशक्त ऐतिहासिक पात्र बन चुके है जिनके व्यापक सृजन का ऐतिहासिक अध्ययन अति आवश्यक है।

संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ. रमाकान्त पाण्डेय, महाकवि कालीदास विरचित, मालविकाग्निमित्रम, चौरवम्भा, सुरभारती प्रकाशन,
2. वाराणसी, 2010
3. डॉ. श्री कृष्णमणि त्रिपाठी, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, चौरवम्भा, सुरभारती ग्रन्थमाला, वाराणसी, 2004, पृष्ठ–7 3. प्रो. रणदेव, प्रो. चड्ढा, मालविकाग्निमत्रम् राज पब्लिशर्ज, जालन्धर, पृष्ठ–9
4. कालीदास विकिपीडिया – 4. प्रो. रणदेव, प्रो. चड्ढा, कालीदास प्रणीतम् मालविकाग्निमित्रम्, राज पब्लिशर्ज, जालन्धर, पृष्ठ–19
5. सुबोधचन्द्र पन्त, महाकवि कालीदास विरचिंतु, अभिज्ञानशकुन्तलम्, मोतिलाल, वनारसी दास, दिल्ली पृष्ठ–15